नाम : गुरु पद पूजन

दिव्य आशीर्वाद प.पू.आगम दिराकर श्रमण सूर्य मुनिराज श्री
लक्ष्मण विजयजी म.सा.

दिव्याशिष : प.पू.पन्यासप्रवर गुरुदेव श्री लोकेन्द्रविजयजी गणिवर्य म.सा.

प्रेरणा संयोजक एवं रचनाकार : मुनिराज श्री लाभेषविजयजी म.सा.

प्रेरण एवं रचनाकार : मुनिराज श्री लवकेश विजयजी म.सा. - सुधाकर
मुनिराज श्री ललितेश विजयजी म.सा. - सागर

प्राप्तिस्थान : श्री पार्श्व पद्मावती शक्ति पीठ,
शंखेश्वर तीर्थ, जिला : पाटण, उत्तर गुजरात

श्री सीमन्धर स्वामी जैन मंदिर,
अहमदाबाद इन्दौर रोड, दाहोद (गुजरात)

प्रति २०००/-

मूल्य रु. ५०/-

मुद्रक अरिहंत ग्राफिक्स,
अहमदाबाद

सम समकित-भाव

आओ जीवन जीने के लीए कुछ ऐसा करे जिससे हमारा भव भवान्तर सुधरे, ईष्ट की प्राप्ति हो। सम समकित भाव के दर्शन हो.। ज्ञान ज्योति प्रज्जवलित हो, आस्था, विश्वास, श्रद्धा और तप को संचरण हो। चारित्रवृद्धि से अपने आपके लिए मोक्ष सोपान पर चढते हुए पाए । पूजिए पूज्य तीर्थकरो को, अर्हतो को, आचार्य भगवंतो को, उपाध्यायो को और लोक के साधक साधुओ को । यदि चाहते हो मनोवांछित फल तो उठिए स्नान ध्यान कीजिए । जप तप निष्ट होकर प्रभु की आराधना को महत्व दीजिए। उससे इच्छित फल की प्राप्ति अवश्य होगी

यह प्रत्यक्ष अनुभव की बात है कि पूजा के समर्पण से अपूर्व शान्ति मिलती है पूज्य पुरुषो का गुणानुवाद कभी भी निरर्थक नही जाता है । क्योकि उन्होने जो जप, तप, त्याग, ध्यान आदि किया, वह यथार्थ में महिमा मंडित नही अपितु आंनदित करने वाला होता है। पुज्य है आराध्य है जो भी वे सदैव सुख-समृद्धि से रहित त्रिलोक निधि रत्नत्रय की परम आराधना करने से ही लोक प्रसिद्ध हुए । हमारे जैनो के मात्र नही, अपितु साहित्य जगत सर्वमान्य परम पूज्य कलिकाल कल्पतरु जन जन की आस्था के बिन्दु, श्रद्धा के सुरभित पुष्प, शताब्दी नायक, क्रियोद्धारक भक्तो के चिंतामणि प्रकट प्रभावी प्रभु श्रीमद विजयराजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का होना स्वाभाविक था । उनके गुणो की पूजन परम पूज्य आचार्य श्री यतीन्द्र सूरीश्वर जी म.सा. का रचना अति ही प्रभावकारी है उसे हम लोगो के द्वारा एक बृहद रुप दिया गया । यह पूजन मात्र पूजन नही अपितु गुण-गौरव और जीवन की जीवंत शाश्वत दीप्त ज्योति है यह मंत्र पूर्ण है, यह मन को हर्षित करने वाली सुख-शान्ति देने वाली है वे हमारे गुरु है, गुरु कृपा गौरव प्रदान करती है गुरु गरीमा की विधि में सुविधि है, गुरुपद में गुरु उर्जा है और गुरुभक्तो के लिए भगवद् स्वरुप दशनि वाली है ।

मुनि लाभेशविजयजी म.सा.
शंखेश्वर

श्री नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्व साहूणं

ऐसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवई मंगलम्

गुरु स्थापना सूत्र

(श्रावक गण हाथ जोडकर श्रवण करे)

पंचिंदिय संवरणो तह नव विह बभचेर गुत्तिधरो,

चउविह कसाय मुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ।

पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायार पालण समत्थो,

पंच समिओतिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ ॥

पंच परमेष्ठि वन्दना

(संगीत के साथ सभी बोले)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिताः सिद्धाश्च सिद्धि स्थिताः ।

आचार्या जिनशासनोन्नति करा पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकः ।

पंचैते परमेष्ठिः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

पंच परमेष्ठि नमस्कार

महामंत्र धुन: (संगीत के साथ ३ बार बोले)

ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं
ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं
ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं
ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं
ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्व साहूणं
ॐ ह्रीँ सुधर्म गणधराय नम:
ॐ ह्रीँ श्री विश्व पूजिताय, राजेन्द्र सूरि गुरुदेवाय नम:

गुरु महिमा

प्रार्थना

(सभी श्रावक श्राविका हाथ जोडकर श्रवण करें)

अखण्ड मंडलाकारं, व्याप्तम् येन चराचरं ।
तत्पदं दर्शित येन तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥

अज्ञान तिमिरंधानां, ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
नैत्रमुन्मिलितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥

संसार वृक्ष मारुढा, पतन्तो नरकार्णवि ।
येन चैवोद्धृता: सर्वे, तस्मै श्री गुरुवे नम: ।

ज्ञान शक्ति समारुढ:, तत्व माला विभूषित: ।
भुक्ति मुक्ति प्रदानाय, तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥

अनेक जन्म संप्राप्त, सर्व कर्म विदाहिने ।
स्वात्म ज्ञान प्रभावेण, तस्मै श्री गुरुवे नम: ॥

ध्यान मूलं गुरु मूर्ति, पूजा मूलं गुरु पदं ।
मंत्र मूलं गुरुवाक्य, मोक्ष मूलं गुरु कृपा ॥

श्री गुरु गुण वन्दना स्तुति

विद्यालंकरणं सुधर्मशरणं, मिथ्यात्विनां दूषणम्
विद्दवद् मंडल मंडनं सुजनता, सद्बोधि बीजप्रदम् ॥
सच्चारित्रनिधिं दया भर विधिं, प्रज्ञावतामादिमम्
जैनानां नवजीवनं गुरुवरं, राजेन्द्र सूरिं नमः ॥

धुर्यो यो दस संख्यके पि यतिनां, धर्मे दृढ़ संयमें,
सत्वात्मा जनतोपकार, निरतो भव्यात्मानां बोधकः ।
शास्त्राणं परिशिलने, दृढ़मति ध्यानी क्षमावारिधि,
स्तं शान्तं करुणावतार मनिशं, श्री राजेन्द्र सूरिं नमः ॥

वाणी यस्य सुधारसमति, मधुरा दष्टिर्महा मंजुला,
संव्रज्यासुख शान्तिदा, खलु सदा न्यायादिदोषापहा ।
बुर्द्धिर्लोकसुखान चिंतन परा, कल्याणकर्ती नृणां,
लोके सुप्रथितास्तितं, गुरुवरं राजेन्द्र सूरिं नमः ॥

यः कर्ता जिन बिम्ब, अंजनशलाका नामेने कात्मनां,
मूर्तिश्चापि जिनेश्वरस्य, शतशः प्रतिष्ठयन्मन्दिरे ।
जिणोर्द्धारमनैक जैन, नलयस्याचीकरवच्छावक्रे,
स्तं सत्कार्यकरं मुदा गुरुवरं श्री राजेन्द्र सूरिं नमः ।

लौके योविहरन सदा, स्वक्चने वरे मिथो देहिनां,
दूरि कृत्यसहानुभूतिरुचिरां, मैत्री समावर्धयत ।
मुढाश्चापि हितोपदेश वचसा धर्मात्मनः सत्यघाद्,
देशोपद्रवनाशकं तमनितं, श्री राजेन्द्र सूरिं नमः ॥

यो गंगाजल निर्मलान गुणगणान, संधारयनवर्णिरा,
यं यं देशमलंचकार गमनैश्तं तं त्वपायीन्मुदा ।
सच्छास्त्रामृत वाक्य वर्णण वशाद मेघवृतं यो घरन,
तं सज्ज्ञानसुधानिधिं कृतिनुतं श्री राजेन्द्र सूरिं नमः ॥

तेजस्वी तपसा प्रदीप्त वदनः सौम्योति वक्ताचलः,
शास्त्रार्थैर्विशु परान विजित्य विविध मानेस्तथा युक्तिभिः ।
शिष्यांस्तान करोत्स्वधर्म निरतान यो ज्ञान सिन्धु प्रभु,
स्तं सूरि प्रवरं प्रशान्त वपुषं श्री राजेन्द्र सूरि नमः ॥

लोकान्मंदमतीनस्वधर्म वितुरवाप्रादान बहुन विक्ष्ययो,
जैनाचार्य निबद्ध सर्व निगमानां लोयं बुद्धया चिरम ।
मत्यार्न बोधयितुं सुखेन विशदान धर्मान्महासागधी,
कोषं सत्यं तनोत्तमच्छ मनसा राजेन्द्र सूरिं नमः ॥

शोधन कर्म

वायुकुमार मंत्र (भूमि शुद्धिकरण मंत्र)

मंत्रः ॐ ह्री ँ वातकुमाराय विघ्न विनाशकाय महीं पूतां कुरु कुरु स्वाहा ।
(इस मंत्र के द्वारा डाभ के घास की बनी पुंजणी या मयुरी पिच्छी से भूमि प्रमार्जन मंडल के चारो ओर करे और बाद में थाली २७ पर डंके लगाये ।)

मेघ कुमार मंत्रः

मंत्र ॐ ह्री ँ मेघकुमाराय धरां प्रक्षालय हूँ फूट् स्वाहा ॥
(यह मेघ कुमार देव का मंत्र बोलकर वाराकुँची को पानी के कलश में डूबोकर मंडल के चारों तरफ जल छांटन करें)

केशर के छाँटनेः

मंत्रः ॐ भूरसि भूतधात्रि सर्व भूतहिते भूमिं शुद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॥
(यह मंत्र बोलकर मंडल के चारो ओर केशर के छाँटने करना ।)

चेष्ठा पूर्वक मंत्र स्नानः

सूचना : मंत्र बोलते समय हमारे दोनों हाथ सिर के उपर इस तरह हो जैसे हम स्नान कर रहे हैं ।

मंत्रः ॐ नमो विमल निर्मलाय सर्व तीर्थ जलाय पाँ पाँ वाँ वाँ ज्वीं क्ष्वीं अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ।

कल्मष दहन:

(इस मंत्र को बोलते समय दोनों भुजाओं का स्पर्श करे)

मंत्र: ॐ विद्युत स्फुल्लिंगे महाविद्ये सर्व कल्मषं दह दह स्वाहा ।

आत्म रक्षा मंत्र:

(आत्मा रक्षा मंत्र की क्रिया अनुक्रम से आरोह-अवरोह (उतार-तढाव) क्रम से तीन बार करना हैं)

मंत्र: क्षि प ॐ स्वा हा

(घुटना) (नाभी) (हृदय) (मुख) (शिखा)

आत्मरक्षा वज्रपंजर स्तोत्र

ॐ परमेष्ठि नमस्कारं सार नवपदात्मकं ।
आत्मरक्षाकरं वज्रपंजराभंरमराम्यहं ॥१॥

ॐनमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् ।
ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुख पटं वरम् ॥२॥

ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी ।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥

ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयो: शुभे ।
ऐसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥

सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहि: ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांङ्गार-खातिका ॥५ ॥

महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशिनी ।
परमेष्ठि पदोद्भूता, कथिता पूर्व सुरभि: ॥७ ॥

यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि पदै: सदा ।
तस्य न स्याद् भयं व्याधि, राधिकाश्चऽपि कदाचन ॥८ ॥

अथ श्री मंडला पूजन प्रारंभ

रक्षा पोटली अभिमंत्रित करने का महामंत्रः

ॐ गं गां गीं गुं गें गौं गः गुरुवराय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सुरिश्वराय, पर शत्रुकृतमारणोच्चाटन विद्वेषण स्तभंन मोहनवशीकर्णादि दोषान छीन्द छीन्द भीन्द भीन्द तंत्र मंत्र यंत्र प्रयोगान् विस्फोटय विस्फोटय सहस्त्रखण्डान गं फूट स्वाहा । (सात बार मंत्र पढना)

(नीचे लिखे मंत्र को पढते हुए रक्षापोटली पर वासक्षेप करना पूजन में बैठे सभी भाई बहन को देना नीचे दिये गये मंत्र को पढते हुए रक्षापोटली बांधना)

ॐ ह्रीं श्रीं गं गुरुवराय राजेन्द्र सूरिश्वराय मम मनोकामना पूरय पूरय स्वाहाः ।

श्री क्षेत्रपाल पूजन

ॐ क्षँ क्षाँ क्षीँ क्षुँ क्षें क्षौँ क्षँ क्षः अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहाः

सूचना : मंत्र बोलकर, पहले पान रखे, फिर लोंग, इलायती, सोपारी, हरा नारीयल, फुल, मिठाई और इत्र चढाये ।

दिशा पूजन

दस दिग्पाल पूजन (कुसुमांजली द्वारा दसों दिशाओं को क्रम से पूजन करना)

१)	ॐ नमो इन्द्राय स्वाहा	पूर्व दिशा
२)	ॐ नमो अग्नये स्वाहा	अग्नि कोण
३)	ॐ नमो यमाय स्वाहा	दक्षिण कोण
४)	ॐ नमो नैऋत्याय स्वाहा	नैऋत्य कोण
५)	ॐ नमो वरुणाय स्वाहा	पश्चिम दिशा
६)	ॐ नमो वायव्वे स्वाहा	वायव कोण
७)	ॐ नमो कुबेराय स्वाहा	उत्तर दिशा
८)	ॐ नमो ईशानाय स्वाहा	ईशान कोण
९)	ॐ नमो ब्रह्माणे स्वाहा	उर्ध्व कोण (आकाश)
१०)	ॐ नमो नागाय स्वाहा	अधोलोक दिशा (पाताल)

माता केशर देवी का पूजन

ॐ ह्रीं श्रीं दादा गुरुदेव जन्मदात्री माँ केशर देव्यै नमः ।
सूचना : पूजन के माण्डले के अंदर देवली में केशरी साडी एवं श्रीफल से पूजन करना ।

गुरुवर (प्रतिमा) स्थापन मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गुरुवराय विश्वपूजिताय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वराय अत्र वेदिका पीठे अवतरय अवतरय तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ।
सूचना : वेदिका कर केशर का स्वातिक (साथिया) करें, गहरी श्वास लेकर श्वास अंदर रोके (कुंभक करे) स्वाहा शब्द आये तब वेदिका पर प्रतिमा स्थापित करें ।

(राजेन्द्र ईक्कीसा) चौपाई

गुरु गुण - मंडित - गौरव - शीला
मधुरीमा - मार्गी मोक्ष - प्रवीला
पूनम चंदा सुख-शुभ-कंदा
राजेन्द्र सूरि सब जग - वंदा ॥ (१) ॥

जप तप साधक सूरि जिनेन्द्रा
आतप मेटत सर्व जगेन्द्रा
जिन गुण रत्नाकर मुनीन्द्रा
सुक्तिसुधाकर-भव्य गणीन्द्रा ॥ (२) ॥

प्रतिबोधक तारक पारक हो
दुख दारिद कष्ट निवारक हो
यश शील सुसंयम धारक हो
तुम जल चंदन कुसुमाकर हो ॥ (३) ॥

सुब्रह्म-सुधारग-ज्ञान-मुदी
अनुयोग-प्रचारक धर्म मदी
समकित-गुणगारक-पूर्ण-भरी
भव-बंधन छंदन ज्ञान-सरी ॥ (४) ॥

तुम आगम सागर से रञ्जित
पंचाचारसुयति से सज्जित
संसार-तजा वैराग्य-लिया
प्रभुध्यानी हु श्रुत-सार-पिया ॥ (५) ॥

अनुशासित शासन के शिक्षक
गुरु ज्ञान उपासक श्रुत रक्षक
आतमहित कारक सारथी तुम
ज्ञायक नायक भय नाशक तुम ॥ (६) ॥

विद्या विनय गुणनायक तुम
शान्त निजामृत यश दाई तुम
नव नूतन नाविक पतवारक
गुरुवर तुम ही तारक पारक ॥ (७) ॥

तज गेह धरि धरणी सेवी
जन मानस जागृत प्रभु सेवी
अठारह सौ तिरिसठ संवत में
वे जन्म धरा भरत पुर में ॥ (८) ॥

ऋषभ तात थे गौरव पारख
ओसवाल की केशर धारक
मणिमाल गुणी महि पालक सी
सुलक्षण लक्षण रत्न सुती ॥ (९) ॥

रत्नाकर थी रत्नराज लिए
अभिराम गुणी जस मंत हिए
वीस - वरस गिह वास सुधी
मातु-पितु भाउ तात प्रधी ॥ (१०) ॥

गुणगागर सागर वंत-सदा
जणणी भगिणी समी संगिप्रदा
अनगार यति मुनिराज गणी
बहु सेव करी जग - क्षेम - घणी ॥ (११) ॥

वैराग्य विशोधन मार्ग मति
कह नंदि माणिक भ्रात गति
रत्नराज रत्नी रत्नाकर
विजय राजेन्द्र सूरीश्वर वर ॥ (१२) ॥

न्याय दिवाकर संस्कृत प्राकत
अलंकार कोश भूघर प्राभृत
विश्वधरा पर अभिधान नाम
राजेन्द्र सूरिश्वर हि प्रणाम ॥ (१३) ॥

तपागच्छ के गच्छ शिरोमणि
पद पन्यास उदयपुर गणिमुणि
लाभेश लवकेश ललितेश भी
मत्थेण मंदामि मतिमेह भी ॥ (१४) ॥

जिनशासन के मुर्तिवंत तुम
आगम श्रुत के ज्ञानवंत तुम
करते सम्यक मार्ग पुनीत
मिथ्यातम के नाश गणीसं ॥ (१५) ॥

समत्व कार्य की किया कराते
सम्यकत्व मार्ग ही धरवाते
वाधक पातक व्याधि मुक्ता
गुण गुरुज्ञान सुवाचक भक्ता ॥ (१६) ॥

तप उत्सव मह मंथक पंथक
ज्ञान प्रभावक युक्ति कंथक
बाल ब्रम्हचारी गुणधारी
राजेन्द्र सूरीश्वर पदचारी ॥ (१७) ॥

मोहन तीर्थ यतीन्द्र-वेरन्द्रउ
धर्म ध्वजा गुरु हर्ष मुनीन्द्रउ
छत्तीस गुणामृत राजित-सूरि
मालव मानस हंस प्रपूरी ॥ (१८) ॥

संकट मोचक गुरु गुण ज्ञानं
सन्मति दाता सवको मानं
दूर हटावे पापक कष्टं
दु:ख-संताप-विनाशक दुष्टं ॥ (१९) ॥

भव्य जनो के सुन लो विनंती
नाश अमावस पूनम छतरी
करते प्रतिदिन ध्यान गुणीशा
सब जन गावे ज्ञान मनीषा ॥ (२०) ॥

राजेन्द्रसूरीश्वर सिद्धांता
यति यतीन्द्र गणी ज्ञानी इन्द्रा
विधा वंता शारदकंता
घर घर मंगल सूरी मंता ॥ (२१) ॥

जनो जनो को तारना, हम अवगुण की खान
उदय लाभेश मुनि नमे पाने सम्यक ज्ञान

श्री गुरुदेव आव्हान मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गँ गँ गँ गँ गुरुवराय विश्वपूजिताय त्रिस्तुतिक परंपरा पुन: उद्धारकाय जिनशासन कार्य सहाय भक्तगण मनोवांछित पूर्णाय ऋद्धिं सिद्धिं प्रदाय परमयोगी राजाय कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वराय अत्र महापूजन मण्डले अवतरय अवतरय ऐहि संवौष्ट् श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वराय सद् गुरुदेवाय नम: ॥

स्थापना मंत्र :

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गँ गँ गँ गँ गुरुवराय विश्वपूजिताय त्रिस्तुतिक परंपरा पुन: उद्धारकाय जिनशासन कार्य सहाय भक्तगण मनोवांछित पूर्णाय ऋद्धिं सिद्धिं प्रदाय परमयोगी राजाय कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वराय अत्रमहापूजन मण्डले तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वराय सद् गुरुदेवाय नम: ।

संनिधापन मंत्र:

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गँ गँ गँ गँ गुरुवराय विश्वपूजिताय त्रिस्तुतिक परंपरा पुनः उद्धारकाय जिनशासन कार्य सहाय भक्तगण मनोवांछित पूर्णाय ऋद्धि प्रदाय परमयोगी राजाय कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वराय अत्र महापूजन मण्डले मम सन्नहिता भव भव वषट् श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वराय सद् गुरुदेवाय नमः ॥

संनिरोधन मंत्र :

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गँ गँ गँ गँ गुरुवराय विश्वपूजिताय त्रिस्तुतिक परंपरा पुनः उद्धारकाय जिनशासन कार्य सहाय भक्तगण मनोवांछित पूर्णाय ऋद्धि सिद्धि प्रदाय परमयोगी राजाय कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वराय महापूजन मण्डले अत्र स्थातव्यम् श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वराय सद् गुरुदेवाय नमः ॥

अवगुण्ठन मंत्र :

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गँ गँ गँ गँ गुरुवराय विश्वपूजिताय त्रिस्तुतिक परंपरा पुनः उद्धारकाय जिनशासन कार्य सहाय भक्तगण मनोवांछित पूर्णाय ऋद्धि सिद्धि प्रदाय परमयोगी राजाय कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वराय अत्र महापूजन मण्डले परषामदृश्यो भवन्तु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वराय सद् गुरुदेवाय नमः ॥

अंजली मंत्र :

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गँ गँ गँ गँ गुरुवराय विश्वपूजिताय त्रिस्तुतिक परंपरा पुनः उद्धारकाय जिनशासन कार्य सहाय भक्तगण मनोवांछित पूर्णाय ऋद्धि सिद्धि प्रदाय परमयोगी राजाय कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वराय अत्र महापूजन मण्डले मम पुजा गृण्हं गृण्हं स्वाहा श्रीमद् विजय राजेन्द्र सुरीश्वराय सद् गुरुदेवाय नमः ॥

श्री गुरु चरण पादुका पूजन

(मांडले के बीच स्थित गुरु चरण पादुका पर सवा किलो मोतीचूर (बुंदी) का लड्डु चढाना और केशरिया ध्वज रखना)

मंत्र: ॐ ह्रीं श्रीं गँ गँ गँ गँ गँ गुरुवराय विश्वपूजिताय त्रिस्तुतिक परंपरा पुन: उद्धारकाय जिनशासन कार्य सहाय भक्तगण मनोवांछित पूर्णाय ऋद्धि सिद्धिं प्रदाय परमयोगी राजाय कलिकाल कल्पतरु श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वराय पाद पद्माय नमो नम: स्वाहा ।

गुरु वंदना

(सभी भाग्यशाली खडे होकर द्वादशार्व्रत सविधि गुरुदेव के समक्ष गुरु वंदन करे ।) इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसिह आए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसिहि अहो कायं काय संफासं खमणिजो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कन्तो जत्ता भे जवणिज्जंच भे खामेमि खमासमणो देविसिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जांकिचि मिच्छाए मण दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकलिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो में अइयारो कओ तस्स खमासमणो । पडीक्मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि (यह सुत्र दो बार बोले, पश्चात दो बार खमासमा देवे) इच्छामि खमासमणो वंदिउ जाविणज्जाए निसिहिआए मत्थेण वंदामि । (फिर खडे होकर दोनों हाथ जोडकर सुगुरु सुखशाता पृच्छा सुत्र बोले) इच्छकार सुहराई (सुह देवसि) सुख तप शरीर निराबाध सुख संयम यात्रा निर्वहो छो जी । स्वामी शाता छे जी । (फिर एक खमासमणा देकर जीमना हाथ जमीन पर स्थापन करके अब्भुट्ठिओमि सुत्र बोले) इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउ ? इच्छं खामेमि देवसिअं जंकिंचि अपतिअं परपतिअं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जंकिचि मज्झ विणय परिहिणं सुहुमं वा वायरं वा तुम्हे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडम् ।

पाँच अभिषेक

सुवर्ण चूर्ण स्नानम

संम्पुर्ण चुर्ण कनकामृत गंध-युक्तं
मन्त्र पुनीत - परमागम - वर्ण - वर्णम ।
नीत्वा गणीश्वर च सुवर्णचूर्ण
राजेन्द्रसूरि जिन नायक भानु मूर्तिम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र गुरुदेवाय समयक् ज्ञान प्राप्तयर्थे सुवर्ण चूर्णं स्नापयामि स्वाहा

पंचरत्नचूर्णं स्नानम्

ज्ञानं च दर्शन-चरित्र-तपं च चूर्णं
पुष्पादिवासित - पवित्र - पुनीत - नीरम् ।
राजेन्द्रचारुचरणेषु समर्पयामि
भव्यातिभव्य गुण रत्न सुपाद मूले ॥

ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र गुरुदेवाय समयक् ज्ञान प्राप्तयर्थे पंचरत्न चूर्णं स्नापयामि स्वाहा

पचामृत स्नानम्

दुग्धं घृतं दधि सुईक्षु सुचंदनादिं
पंचं च मिश्रीत वरं अभिसिंचयामि ।
पीयुस - पान - जिनशासन राजइन्द्रं
राजेन्द्रराज गणिराज गणीन्द्र नित्यम ॥

ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र गुरुदेवाय समयक् ज्ञान प्राप्तयर्थे पंचामृत स्नापयामि स्वाहा

सर्वौषधि चूर्णं स्नानम्

शंखी शातावरि लक्ष्मण पुष्पिकंच
मूली शतावि सहदेवी सुरभिंच गंधम् ।
तं मिश्र मिश्र गुण कंत सुऔषधिं च
राजेन्द्र-वर्ण वन शुद्धि सुशान्ति पीडाम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र गुरुदेवाय समयक् ज्ञान प्राप्तयर्थे सर्वौषधि चूर्णं स्नापयामि स्वाहा

तीर्थोदक स्नानम्

गंगा सरस्वति सरी यमुनादिनीरं
नेनी प्रयाग हरि नीर-सुशीतलं च ।
तीर्थेश तीर्थ वर नीर सुशुद्धि सर्वं
राजेन्द-बिंव परि - पावन - चिंह - चिहन्म् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र गुरुदेवाय समयक् ज्ञान प्राप्तयर्थे तीर्थोदक स्नापयामि स्वाहा

गुरुदेव की अष्टप्रकारी महापूजन

१. जल पूजा

(मंत्र और श्लोक बोलकर पूजा में बैठने वाले सभी गुरुदेव की प्रतिमा पर कुसुमांजली चढाना)

कुसुमांजली श्लोक : नाना सुगंधि पुष्पौध रंजिता चंचरी कृतनादा ।
धूपामोद विमिश्रा पततात् पुष्पांजलि बिम्बे ॥

मंत्र: ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँह्रौँ ह्रः परम गुरुभ्य: आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पूज्य पादेभ्य: पुष्पांजलि भिरचयामि स्वाहा

दोहा

वर्धमान चौबीसमां, शासनपति शिरताज ।
सद्‌गुरु पद पंकज नमू, सारो वांछित काज ॥१॥

पूजा श्री गुरुराज की, रचना मुझ अभिलाष ।
ब्रह्म सुते वर दायिके, दीजे वचन विलास ॥२॥

सूरि विजय राजेन्द्रजी, प्रकटे दुषम काल
जग में यश लीनो बहु, गुरुवर गुण मणिमाल ॥३॥

गुण षट्‌त्रिशे राजता, सूरीवर गुण भण्डार ।
मुनि मारग ओलखावियो, कर किरिया उद्धार ॥४॥

प्रति बोधि नरनार ने, दीधो समकीत दान ।

धारी तीनो तत्वो ने, श्रद्धा धारी सुजान ॥५॥
जल चन्दन कुसुमें करी, धुप दीप मनोहार ।
अक्षत वलि नैवेद्य फल, पूजा अष्ट प्रकार ॥६॥
अनुक्रम से अष्ट द्रव्य ले, भक्ति भाव उदार ।
गुरु पूजे गुरुपद लहे, पामे सुख श्रीकार ॥७॥

(ढाल.... समृध्दि वृत्ति सिध्दि दे - ए राग)

सुगुरु चरण पूजो पूर्ण प्रेमधारी ने,
प्रेम धारी ने प्रमाद दूर वारि ने ॥ सु. ॥ टेर ॥

अज्ञान अंध मेटवा गुरु रवि समान है,
सत्यशील धारी गुरु शुद्धाचारी ने ॥ सु. ॥१॥

गुरु समान है नहीं उपकारी विश्व में,
गुरु कल्पवृक्ष सरीखा कुगुरु निवारी ने ॥सु. ॥२॥

भू, जल, तरुवत, सद्गुरु परोपकारी है,
शिवमार्ग के दातार, ध्यावो जगदाधारी ने ॥सु. ॥३॥

निर्मल जल समान ज्ञान ध्यान में प्रवीण,
उपदेश देई अव्रती व्रत किये विचारी ने ॥ सु. ॥४॥

नहीं क्रोध मान माया लोभ विषय वासना
अदोषी गुरु सेवो बाल ब्रह्मचारी ने ॥सु. ॥५॥

वसुधापे श्री राजेन्द्रसूरि भूरि जस लियो
दिखायो मार्ग शुद्ध बुझ्या नरनारी ने ॥सु. ॥६॥

जल कलश भरी पूजो, सद्गुरु के चरण को
पावो यतीन्द्र पद सोभागी आत्म तारी ने ॥७॥

काव्य : ज्ञान ध्यान तपोदान, त्रिविधार्थ प्रदायकम् ।
श्रुतज्ञं राजेन्द्र सूरिं भक्त्या च परिपूजयेत्

मंत्र: ॐ ह्रीं षट् त्रिंशद्गुण समन्विताय विश्वजन हितावहाय सौधर्म बृहत्पोगच्छ परंपरा वतंसकाय जगपूज्जाय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पाद पद्माय जलं यजामहे स्वाहा: ।

(पश्चात: - ॐ ह्रीं श्री राजेन्द्र सूरि जलं समर्पयामि स्वाहा)

यह मंत्र ३६ बार बोलते हुए शुद्ध सुगंधित जल द्वारा श्री गुरुचरण में जल चढाना । अन्त में मांडले में आठ पूष्प रूपी पाखडी में प्रथम पान, सोपारी, लोंग, इलायती, सवारुपीया, फूल और एक लड्डु चढाना । इसी क्रम से प्रत्येक पुजा में सामग्री चढाना । मंत्रोच्चार समाप्ति पर थाली के २७ डंके बजाना ।

२.चन्दन पूजा

(मंत्र और श्लोक बोलकर पूजा में बैठने वाले सभी गुरुदेव की प्रतिमा पर कुसुमांजली चढाना)

कुसुमांजली श्लोक : नाना सुगंधि पुष्पौध रंजिता चंचरी कृतनादा ।
धूपामोद विमिश्रा पततात् पुष्पांजलि बिम्बे ॥१॥

मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्र: परम गुरुभ्य: आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पूज्य पादेभ्य: पुष्पांजलि र्भिरचयामि स्वाहा ।

दोहा

पूजा करो नव अंगनी, घसी केसर घनसार ।
चन्दन सम शीतल गुरु, जिन शासन शिणगार ॥

(ढाल.... संवत एक अढलंतरे रे जावड शाह नो उद्धार... ए देशी)

अट्ठारासौ तिरियासी में रे जन्म भरतपुर माय, तिथि सप्तमी मास पौषनी रे उज्ज्वल पक्ष सुहाय हो सुगुणा । पूजो सुगंधित चंदने रे मेटवा भव-भव फंदने रे गुरु गुण गावो रसाल ॥१॥ तात श्री ऋषभदास जी रे, गौत्र पारख ओसवाल । लाडिला केशरबाई ना रे गुरुवर गुण मणिमाल हो सुगुणा ॥

पूजो ॥२॥ पुत्र सुलक्षणो जाणी ने रे, रत्नराज दियो नाम । नाम जिस्या गुण निवडया रे, जग जस लहि अभिराम हो सुगुणा ॥ पूजो ॥३॥ वीस वरस घर में वस्या रे बुद्धि तणा भण्डार । मात तात वृद्ध भ्रात नी रे, आणा पालन हार हो सुगुणा ॥ पूजो ॥४॥ श्री जिन पूजा भक्ति मां रे, नित्य रहे लय लीन, वाणी सुणे जिनराजनी रे, विनय विचार प्रवीण हो सुगुणा ॥ पूजो ॥५॥ अवगुण तज परगुण लहे रे उपकारी रत्नराज । संगति सज्जन जन तणी रे, सुधरे सघला काज हो सुगुणा ॥ पूजो ॥६॥ आयु पुरण मात तात नो रे, जाणी सदा नो वियोग । सार नहीं संसार मां रे, थिर नहीं रहे सुख भोग हो सुगुणा ॥पूजो ॥७॥ रंग चढ्यो वैराग नो रे, झुठा सब घरबार । संबंधी सहु स्वाथी रे, स्वार्थियों संसार हो सुगुणा ॥ पूजो ॥८॥ जेम नंदिवर्धन भ्रात से रे, आदेश लह्यो महावीर । तिम माणिक चंद भ्रात से रे, कहे रत्नराजगंभीर हो सुगुणा ॥ पूजो ॥९॥ वडिल बंधू कहे मोह वसे रे, अब मत दो मुझे छेह । मात-पिता ना वियोग थी रे, दाजे थे अमदेह हो सुगुणा ॥ पूजो ॥१०॥ गुणी जन शिव पथ शोधता रे, पूजो तमे महाभाग हो सुगुणा । सूरि राजेन्द्र प्रताप थी रे, यतीन्द्र लहे वैराग हो सुगुणा ॥ पूजो ॥११॥

काव्य : ज्ञान ध्यान तपो दान, त्रिविधार्थ प्रदायकम् ।
श्रुतुज्ञं राजेन्द्र सूरिं भक्त्या च परिपूजयेत् ॥१॥

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं षट्त्रिंशद् गुण समन्विताय विश्वजन हितावहाय सौधर्म बृहत्तपोगच्छ परंपरा वतंसकाय जगपूज्याय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पाद पद्माय चंदन यजामहे स्वाहा । (प्रथम केशर चन्दन से नवांगी पूजन करना) (ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र सूरि चन्दनं समर्पयामि स्वाहा) इस मंत्र से प्रतिमा के चरण अंगुष्ठ पर वासक्षेप से ३६ बार पूजन करना । २७ बार डंके बजाना । पूजन सामग्री मांडले में चढाना ।)

३. पुष्प पूजन

(मंत्र और श्लोक बोलकर पूजा में बैठने वाले सभी गुरुदेव की प्रतिमा पर कुसुमांजली चढाना)

कुसुमंजली श्लोक : नाना सुगंधि पुष्पौध रंजिता चंचरी कृतनादा ।
धूपामोद विमिश्रा पतताद् पुष्पांजलि र्बिम्बे ॥१॥

मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः परम गुरुभ्यः आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पूज्य पादेभ्यः पुष्पांजलि र्भिरचयामि स्वाहा ।

दोहा

पुष्प सुगंधित मोगरा, चम्पक फूल अमूल ।
पूजो सद्गुरु प्रेम से, पामो सुख अतुल ॥

(तर्ज : धन धन वो जग में नरनार... ए राह)

जग में वो नर चतुर सुजान, अथिर संसार को तजने वाले । संसार को तजने वाले, गुरुराज को भजने वाले ॥ जग में ॥१॥ आये भरतपुर यतिराज, श्री प्रमोद विजय महाराज । मिल सघला जैन समाज, गुणीजन गुण के समझने वाले ॥ जग में ॥२॥ बूझो बूझो नरनार है यह संसार असार । झूठा है सब घरबार नहि कोई संग में चलने वाले ॥ जग में ॥३॥ जावेगा अकेला आप संग रहेगा पूण्य रुपाप । रोवे कुटुम्ब कबीला बाप, ताप में नहि कोई पडने वाले ॥ जग में ॥४॥ सब झुठी मायाजाल निशि स्वप्न हुओ भूपाल । आखिर जागे तो कंगाल काल से नहीं कोई बचने वाले ॥ जग में ॥५॥ सुणि रत्नराज उपदेश नहिं जग में सुख नो लेश । संबंधीजन से लई आदेश, यतिवर होके विचरने वाले ॥ जग में ॥६॥ उगणीसो चार के साल पंचमी वैसाख रसाल सुदि पक्ष भृगु उजमाल यति दिक्षा आदरने वाले ॥ जग में ॥७॥ श्री हेमविजय गुरु पास, करे गुण को नित अभ्यास नाम रत्नविजय सुविकाश, पर के दुःख को हरने वाले ॥८॥ मुनि यतीन्द्र के शिरताज सूरि राजेन्द्र गुरु महाराज । पुजो पुष्पमाल से आज, गुरु वैराग्य के धरने वाले ॥ जग में ॥९॥

काव्य : ज्ञानध्यान तपोदान त्रिविधार्थ प्रदायकम् ।
श्रुतुज्ञं राजेन्द्रसूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं षट्त्रिंशद् गुण समन्विताय विश्वजन हितावहाय सौधर्म बृहत्तपोगच्छ परंपरा वतंसकाय जगपूज्याय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पाद पाद्माय पुष्पं यजामहे स्वाहा । (ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र सूरि पुष्पं समर्पयामि स्वाहा) इस मंत्र से गुरु प्रतिमा पर ३६ बार पुष्प समर्पित करना । पश्चात पूजन सामग्री मंडल में चढाना और २७ डंके बजाना ।

४.धूप पूजन

(मंत्र और श्लोक बोलकर पूजा में बैठने वाले सभी गुरुदेव की प्रतिमा पर कुसुमांजली चढाना)

कुसुमांजली श्लोक : नाना सुगंधि पुष्पौध रंजिता चंचरी कृतनादा ।
धूपामोद विमिश्रा पततात् पुष्पांजलि बिम्बे ॥१॥

मंत्र : ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः परम गुरुभ्य: आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पूज्य पादेभ्य: पुष्पांजलि र्भिरचयामि स्वाहा ।

दोहा : फैली सुगंधि विश्व में, गुरु गुण गहन गंभीर ।
पूजो सुगंधित गंधसु, टालो भव भय पीर ॥

(ढाल.... महावीर गौचरी आया चन्दनबाला.... ए राह)
गुरु ज्ञान गुण ना दरिया, उपकार भूतल बहु करिया रे ॥ गुरु ॥

निपूण न्याय अलंकार कोष व्याकरण को हृदये धरिया ।
हुए अल्प समय में ज्ञाता, जैनागम ज्ञान से भरिया रे ॥ गुरु ॥ १ ॥

बडी दीक्षा हुई उदयपुर में, पद पन्यास के वरिया ।
फैली जगत में प्रख्याति, नीकी है जिनकी चर्या रे ॥ गुरु ॥ २ ॥

तपगच्छ श्री धरणेन्द्र सूरि, निज गुरुवचने अनुसरिया ।
श्री रत्न विजयजी पासे लहि बोध, आदेश आदरिया रे ॥ गुरु ॥ ३ ॥

मंत्रतंत्र ज्योतिष विद्याधर, जग में गुणी अवतरिया रे
बीकानेर जोधाणा नृप को, रंजित किये सत्य उचरियो रे ॥ गुरु ॥ ४ ॥

श्री पूज्य को भेंट कराये छडी परवाना नजरिया ।
शिरोपाव दुशाला आदि, गुरु शील गुणे परवरिया रे ॥ गुरु ॥ ५ ॥

सद्गुरु पर उपकारी पूरा, सद्गुरु आतम ठरिया ।
सद्गुरुवर पूजा से कई भवसागर से तरिया रे ॥ गुरु ॥ ६ ॥

धूप सुगंधित पूजा करिये यही तरने का जरिया
सूरि राजेन्द्र लहेर महेर से, यतीन्द्र का कारज सरिया रे ॥ गुरु ॥ ७ ॥

काव्य : ज्ञानध्यान तपोदान त्रिविधार्थ प्रदायकम् ।
श्रुतज्ञं राजेन्द्रसूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत ॥

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं षट्त्रिंशद गुण समन्विताय विश्वजन हितावहाय सौधर्म बृहत्तपोगच्छ परंपरा वतंसकाय जगपूज्जाय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पाद पाद्माय धूपं यजामहे स्वाहा ।
(ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्रसूरि धूपं आघ्रपयामि स्वाहा) इस मंत्र को ३६ बार बोलते हुए गुरुदेव को धुप समर्पित करना पूजन का समान माण्डले में चढाना थाली के २७ डंके बजाना ।)

५.दीपक पूजन

(मंत्र और श्लोक बोलकर पूजा में बैठने वाले सभी गुरुदेव की प्रतिमा पर कुसुमांजलि चढाना)

कुसुमांजलि श्लोक : नाना सुगंधि पुष्पौध रंजिता चंचरी कृतनादा ।
धूपोमोद विमिश्रा पततात् पुष्पांजलि बिम्बे ॥ १ ॥

मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः परम गुरुभ्यः आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पूज्य पादेभ्यः पुष्पांजलि भिरचयामि स्वाहा ।

दोहा : मिथ्या तम ने मेटवा, श्री गुरुदीप समान ।
तिम दीपक पूजा करो, पावो जग सम्मान ॥

(ढाल : अजव आनन्दो ज्ञान पर पूजो.... ए राग)

सद्गुरु शुद्ध मारग ओलखावे, भूले को पंथ बातवेजी ॥ सद् ॥
रवि दीपक जिम तिमिर हाटवे, तिम अज्ञान मिटावेजी ।
उपकारी गुरु मुझ घट दीपक, पातिक पूंज पलावे जी ॥ १ ॥ सद् ॥

पंचमी दीपक पूजा करता, पंचमी शिव गति पावेजी ।
गुरुतारक गुरु दीप समाना, दुर्गति बन्ध तुडावे जी ॥ २ ॥ सद् ॥

गुरु सम जग में नहीं हितकारी, डुबता ने पार लगावे जी,
चिन्तामणी गुरु परचा पूरण आप तिर ने तिरावे जी ॥३॥ सद् ॥

श्रीपूज्य श्री धरेणेन्द्र सूरिजी, शिथिलाचार बढावे जी,
यति किरिया तज हुए प्रमादी, तप जप मन नहीं भावेजी ॥४॥ सद् ॥

हित शिक्षा दे रत्नविजयजी, यदि कर्तव्य बतावेजी,
वाद हुओ कुछ अतर विषय में, श्री पूज्य को छटकावे जी ॥५॥ सद् ॥

प्रमोद रूचि धन विजय जी आदि यतिगण संग सुहावेजी,
आहोर आये निजगुरु पासे, बीती सहु भुगतावे जी ॥६॥ सद् ॥

प्रमोद सूरि श्री संग सहमत से सूरि मंत्र धरोवजी,
अब्द चौवीस सुदि माधव पंचमी, श्रीपूज्य पद ओ पावेजी ॥७॥ सद् ॥

विजय राजेन्द्र सूरि नाम थपाणो, संघ में उत्सव थावे जी,
यशवंत सिंहजी आहोर ठाकुर, श्री पूज्य महत्व वधावे जी ॥८॥ सद् ॥

भेंट करे छडी, चामर पालखी, गुरु जगमाहे पूजावे जी ।
विचरे श्री पूज्यजी देश विदेशे, मेवाड देश में आवेजी ॥९॥ सद् ॥

शंभुगढ फिर फतेहसागरजी, पट्टोत्सव मंडावे जी ।
ठाम ठाम पूजा गुरुवर की, महिमा वरणी ना जावे जी ॥१०॥ सद् ॥

भेंट करे कामेति उदयपुर, जस जग माहे गवावे जी ।
सूरि राजेन्द्र की दीपक पूजा यतीन्द्र विजय विरचावे जी ॥११॥ सद् ॥

काव्य : ज्ञानध्यान तपोदान त्रिविधार्थ प्रदायकम् ।
श्रुतज्ञं राजेन्द्रसूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं षट्त्रिंशद् गुण समन्विताय विश्वजन हितावहाय सौधर्म बृहत्तपोगच्छ परंपरा वतंसकाय जगत्पूज्याय श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वर पाद पद्माय दीपकं यजामहे स्वाहा ।
(ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र सूरि दीपं दर्शयामि स्वाहा) यह मंत्र बोलते हुए माण्डले में ३६ दीपक रखना पूजना की सामग्री माण्डले में चढाना । अंतिम मंत्र बोलने के बाद थाली के २७ डंके बजाना ।)

६.अक्षत पूजन

(मंत्र और श्लोक बोलकर पूजा में बैठने वाले सभी गुरुदेव की प्रतिमा पर कुसुमांजली चढाना)

कुसुमांजलि श्लोक : नाना सुगंधि पुष्पाघ रंजिता चंचरी कृतनादा ।
धूपोमोद विमिश्रा पततात् पुष्पांजलि बिम्बे ॥

मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः परम गुरुभ्यः आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पूज्य पादेभ्यः पुष्पांजलि र्भिरचयामि स्वाहा ।

दोहा : अक्षत जिम उज्जवल गुरु, गुण उज्जवल अभिराम ।
अक्षत पूजा कीजिए, लिजिये सुख नो धाम ॥

(ढाल : आनन्द बधाई केवल उपनो रे.... ए राग)

उत्तम गुणधारी जग जन उपकारी, सूरि राजेन्द्र जी ॥ टेर ॥
यतिपणे एकवीस चौमासा, किये गुरु गामो गाम ।
श्री संघ में बहु आनन्द वरत्या, सर्या घणाना कामजी ॥उ.॥ १ ॥

नेत्र रोगी पण सुखिया होकर जपे गुरु का नाम ।
उदर रोगी हुआ घणा निरोगी गुरु गिरुआ अभिरामजी ॥ उ. ॥ २ ॥

निर्धनिया धनवंत हुआ बहु, यशधारी सरनाम
सत्पुरुषों की महितल महिमा आनंद ठामो ठामजी ॥ उ. ॥ ३ ॥

उगणीसो चौबीस की साले, जावरा शहर कयाम ।
चौमासा में भगवती वांचे, सकल संघ विसरामजी ॥ उ. ॥ ४ ॥

मान दियो नवाब साहब ने जाने जनता आम,
प्रभावना हुई जिनशासन की, संघ खरचे घणा दामजी ॥ उ. ॥ ५ ॥

श्री पूज्य श्री धणेन्द्र सूरिने लागो जब पैगाम
मोटी चिंता चित्त में पेठी सोचे होय चित्रामजी ॥ उ. ॥ ६ ॥

विनय पत्र दे दो यति भेजे, जावरे गुरु मुकाम ।
नव कल में मंजुर करण को भाखे श्री गुरु तामजी ॥ उ. ॥ ७ ॥

आखिर नवकल में पालन को, धरणेन्द्र सूरि भरे हाम ।
क्रियावन्त ने जग सहुमाने, करे सभी प्रणामजी ॥ उ. ॥ ८ ॥

परिग्रह सब जिनमंदिर मेली, सूरि राजेन्द्र सुस्वाम
प्रमोदरुचि संग, धन विजयजी दिल के बडे मुलामजी ॥ उ. ॥ ९ ॥

दशमी मास आषाढ कृष्ण की, जावरा नगर सुधाम ।
सवंत उगणीसो पंचवीस में, महाव्रत लिये तमाम जी ॥ उ. ॥ १० ॥

अक्षत से श्री संघ वधावे उत्सव अट्ठाई हंगाम ।
यतीन्द्र पति ने भविजन पूजे वंदे नित्य गुण ग्रामजी ॥ उ. ॥ ११ ॥

काव्य : ज्ञानध्यान तपोदान त्रिविधार्थ प्रदायक्रम ।
श्रुतज्ञं राजेन्द्रसूरि, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं षट्त्रिंशद गुण समन्विताय विश्वजन हितावहाय सौधर्म बृहत्तपोगच्छ परंपरा वतंसकाय जगपूज्जाय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पाद पद्माय स्वच्छाऽक्षतं यजामहे स्वाहा ।
(ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र सूरि अक्षतं समर्पयामि स्वाहा ।)

यह मंत्र बोलते हुए गुरु देव की ३६ बार अक्षत से पूजन करना पूजन की सामग्री माण्डले में चढाना । अंतिम मंत्र बोलने के बाद थाली के २७ डंके बजाना ।)

७.नैवेध पूजन

(मंत्र और श्लोक बोलकर पूजा में बैठने वाले सभी गुरुदेव की प्रतिमा पर कुसुमांजली चढाना)

कुसुमांजलि श्लोक : नाना सुगंधि पुष्पौध रंजिता चंचरी कृतनादा ।
धूपामोद विमिश्रा पतताद् पुष्पांजलि बिम्बे ॥ १ ॥

मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः परम गुरुभ्यः आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय राजेन्द्र सरीश्वर पूज्य पादेभ्यः पुष्पांजलि र्भिरचयामि स्वाहा ।

दोहा : वयण मृदु उच्चरे गुरु, कटुक वचन को टाल ।
थाल भरी नैवेद्य की, पूजो परम दयाल ॥

(ढाल.... सांभलजो गुरु संयम गारी... ए राग)

सूरि राजेन्द्र गुरुवर की पूजा, नैवेद्य द्रव्य सु कीजे जी ।
प्रबल पुण्य से अवसर पायो नरभव लाहो लीजे जी ॥ सु. ॥ १ ॥

मुनि किरिया उत्कृष्टी पाले, धुज्या शिथिलाचारी जी,
श्वेताम्बर दिग्दर्शन पामी, हरख्या नर ने नारी जी ॥ सु. ॥ २ ॥

किरिया उद्धार कर चातुर्मासा, ओगण चालीस कीनाजी
प्रति बोध्या घणा नर ने नारी ठाम ठाम जस लीनाजी ॥ सु. ॥ ३ ॥

अब्दपचीस पचासरुबासठ खाचरोद चातुर मासेजी,
अट्ठाई उत्सव और प्रतिष्ठा, धर्मीजन किये खासेजी ॥ सु. ॥ ४ ॥

कुकसीजन श्री सद्गुरु वृत्ति, देखीने ललचायाजी,
समकित धारी हुए नरनारी, द्रव्यानुयोग धराया जी ॥ सु. ॥ ५ ॥

ओगणतीस में पुर रतलामे, धर्मवाद हुओ भारीजी,
जब सिद्धान्त प्रकाश निर्मायो, गुरुजय जग में जारी जी ॥ सु. ॥ ६ ॥

जालोर चातुर्मासे गुरुजी उपदेश नीको दीधोजी,
शत्शत् किये जिन प्रतिमा पूजक लाभ अखुट तिहां लिधोजी ॥सु.॥७॥

सम्वत् उगणीसो चालीसे, राजनगर शुभ धामेजी,
वाद परस्पर पत्र देवाणा, गुरु कीरती जग पामेजी ॥सु.॥८॥

नगर निंबाडे थानक पंथी नन्दरामजी संगेजी,
चरचा कर किये साठ घरो को मूर्तिपुजक रंगेजी ॥सु.॥९॥

इणविध जावरे तीरपन साले, थानकपंथी जननेजी,
चउ निक्षेपानो अर्थ बतायो श्राद्ध नमायो तनने जी ॥सु.॥१०॥

रतलामे गुरुमहिमा जाणी, उगणीसे चउपन में जी ।
मिथ्यावादी सत्यवादी ने देखी खीजे मन में जी ॥सु.॥११॥

पंचावन प्रभु अंजनशालाका, आहोर मरुधर कीनीजी,
नवशत बिंब प्रतिष्ठित किने, संघ शाबासी दीनीजी ॥सु.॥१२॥

सुरत साठ के साल पधारे गुरु किरिया जोई हरखेजी ।
जाणे पण मत पक्ष ना छंडे हलुकर्मी जन परखेजी ॥सु.॥१३॥

बासठ में चीरोळा पंथी, सद्गुरु शरणे आयजी,
गुरु उपकार कियो अतिभारी जग में नाम कमाया जी ॥सु.॥१४॥

मिथ्यावादी ने जग छंडे, सात्विक जग पूजावेजी,
सूरि विजय राजेन्द्र सुसंगे, हर्षे यतीन्द्र वधावेजी ॥सु.॥१५॥

काव्य : ज्ञानध्यान तपोदान त्रिविधार्थ प्रदायकम् ।
श्रुतज्ञं राजेन्द्रसूरिं, भक्त्या च परिपूजयेत् ॥

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं षट्त्रिंशद् गुण समन्विताय विश्वजन हितावहाय सौधर्म बृहत्तपोगच्छ परंपरा वतसंकाय जगत्पूज्याय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सुरीश्वर पाद पद्माय नैवेद्य यजामहे स्वाहा ।

(ॐ ह्रीं श्रीं राजेन्द्र सुरि नैवेद्य समर्पयामि स्वाहा)

यह मंत्र बोलते हुए ३६ बार नैवेद्य (मिश्री) चढाना माण्डले में लड्डु चढाना । अंतिम मंत्र बोलने के बाद थाली के २७ डंके बजाना ।

८.फल पूजन

(मंत्र और श्लोक बोलकर पूजा में बैठने वाले सभी गुरुदेव की प्रतिमा पर कुसुमांजली चढाना)

कुसुमांजलि श्लोक : नाना सुगंधि पुष्पौध रंजिता चंचरी कृतनादा ।
धूपामोद विमिश्रा पतताद् पुष्पांजलि बिम्बे ॥ १ ॥

मंत्र : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः परम गुरुभ्यः आचार्य प्रवर श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पूज्य पादेभ्यः पुष्पांजलि र्भिरचयामि स्वाहा ।

दोहा : फल पूजा गुरुरायनी करिये भवि मन चंग ।
फल थी फलवर पामीये, लहिये सौख्य सुरंग ॥

ढाल : (तोहीद का डंका आलम में.... ए राह)

सद्धर्म का झंडा जिनमत में फरकाया राजेन्द्र सूरीवर ने ॥ टेर ॥
मुनिजन किरिया उद्धार कर्यो जिन वचन गुरु निज सिर पे धर्यो,
गुरुदेव धर्म इन तीनों को ओलखाया ॥ राजेन्द्र सूरीवर ने ॥ १ ॥

पंचेन्द्रिय दाव में नहीं रमता त्रिगुप्ति पण सुमति सुमता ।
नव विध ब्रह्मव्रत पालन का बल दिखलाया ॥ रा.सु. ॥ २ ॥

पंच महाव्रत पालन में सूरा, रहे कंचन कामिनी से दुरा
बावीस परिषह जीपक, दोष हटाया ॥रा. सू ॥ ३ ॥

दोष आहार के चालीस दो टाले सतरा भेदे संयम पाले ।
क्षमा आर्जव मार्दव दशविध, धर्म सुनाया ॥ रा. सू. ॥ ४ ॥

अभिधान राजेन्द्र सुकोष रचा, जैन जैनेतर सब ही को जचा
विद्वानी जग जाहिर हुई, यश पाया ॥ रा. सू. ॥ ५ ॥

कवितज्ञ और कृतज्ञ गुरु, मै उनके चरणे शीश धरू ।
मुनि किरिया में नहीं किंचित दोष लगाया ॥ रा. सू. ॥ ६ ॥

संस्कृत प्राकृत कई ग्रंथ रचे, संगीत बालबोध में भी विरचे ।
सद्‌बोध करी मिथ्या अंधकार हटाया ॥ रा. सू. ॥ ७ ॥

दीक्षा दे कइ एक शिष्य किये श्री संघ से नहीं विपरित गये ।
श्वेत मनोपेत धारी, नहीं रंग रंगाया ॥ रा. सू. ॥ ८ ॥

कई अंजनशलाका प्रतिष्ठा करी उपधान उजमणा हर्ष भरी ।
इण दुषमकाल में श्री जिन धर्म दिपाया ॥ रा. सू. ॥ ९ ॥

नूतन जिनमंदिर जिर्णोद्धार, तीर्थो के संघ निकले कई बार ।
कई गांवो के जाति विद्वेष मिटाया ॥ रा. सू. ॥ १० ॥

शुभकार्य हुए हैं कई ऐसे सद्‌गुरु वर के सद्‌उपदेशे ।
प्रख्यात गुरु आनन्दानन्द वरताया ॥ रा. सू. ॥ ११ ॥

निज भार किसी को नहीं देते थे, अलवाणे पग जग फिरते थे ।
राय रंक को एक समान गिनी अपनाया ॥ रा. सू. ॥ १२ ॥

गुरुभावी भी भुगताते थे, तपध्यान के बल बतलाते थे ।
अग्नि के कोप से कुकसी संघ बचाया ॥ रा. सू. ॥ १३ ॥

गुरु के गुण का नहीं पार लहूँ फल पूजा करे गुरुवर की सहू ॥
मुनि यतीन्द्र को वैराग्य दई, समझाया ॥ रा. सू. ॥ १४ ॥

सर्वोपरी गीत

(तर्ज : निशदिन जोऊं थारी वाटडी, घर आवो ने ढोला - ए राह)

आनन्द हर्ष वधामणा सद्‌गुरु तुम नामे ।
तुम नामे पातिक टले, अविचल सुख पामे ॥ टेर ॥
तुम नामे सुख सम्पति, मिले नव नवी ऋद्धि ॥ आ. ॥ १ ॥

तुम नामे संकट टले, टले सघली व्याधि ।
तुम नामे वांछित फले, टल जावे उपाधि ॥ आ. ॥ २ ॥
सत्यवादी तुम सरीखा नहीं देख्या अनेरा ।
जन्म लहि तुमने किया, उपकार घनेरा ॥ ३ ॥
भाग्योदय से मैं लही, तुम चरणों की सेवा ।
सूरि राजेन्द्र यतीन्द्र में आपो शिवफल मेवा ॥ ४ ॥

काव्य : ज्ञान ध्यान तपोदान, त्रिविधार्थ प्रदायकम् ।
श्रुतज्ञं राजेन्द्र सूरि भक्तया च परिपूजयेत् ॥

मंत्र : ॐ ह्रीँ षट्त्रिंशद्गुण समन्विताय विश्वजन हितावहाय सौधर्म बृहत्त्पोगच्छ परम्परा वसंतकाय जगत्पूज्याय श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वर पाद् पद्माय फलं यजामहे स्वाहा ।
(ॐ ह्रीँ श्रीँ राजेन्द्र सूरि फलं समर्पयामि स्वाहा) इस मंत्र को ३६ बार बोलते हे गुरु देव को बादाम चढाना, पूजन सामग्री में श्रीफल एवं फल मांडले में चढाना । अंतिम मंत्र पर २७ डंके बजाना ।)

कलश

(माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे - ए राह)

गाया गाया गाया गुण गुरु सूरि राजेन्द्र ना
पाया पाया पाया पाया सुख भरपुर
गुरुवर काम कुंभ गुरु कल्पवृक्ष चिन्तामणी
पूण्योदय से मलिया, फलिया वांछित पुर ॥ गा. ॥ १ ॥

महिमा श्री गुरुवर की जग माहे प्रख्यात है ।
मिथ्याताप विदारण तारण तरण जहाज ॥
तप जप संयम, किरिया उत्कृष्टी सूरिरायनी ।
उत्कृष्टी सहुकरणी भवदु:ख हरवा काज ॥ गा. ॥ २ ॥

जन्म भरतपुर लहिने मुनिवर मारग साधीयो ।
श्री जिनशासन शोभा फैली जग के माय ॥

धर्म ध्वजा फरकाई श्रद्धालु कीना घणा ।
गच्छपति धर्म धुरन्धर पंचम काल सुहाय ॥ गा. ॥ ३ ॥

संघ चतुर्विध थाप्या दान शील तप भावना ।
चउविध धर्म सुणायो वरत्या जय जयकार ।
आनन्द मंगल उत्सव महोत्सव हर्ष वधामणा ।
श्री सद्गुरु सुपसाये संघ में मंगलाचार ॥ गा. ॥ ४ ॥

साठ वरस लग संयम पाल्यो पलायो निर्मलो ।
अंते राजगढ आया तीरसठा के साल ॥
सतम पौष शुक्ल भृगवारे गुरु शुभ ध्यान में ।
अस्सी वर्ष नो आयु पूर्ण कियो किरपाल ॥ गा. ॥ ५ ॥

जग में जस पूरण लही शुभमति शुभ गति पामीया ।
तस पट्टे धनचन्द्र सूरिवर जैनागम ना जाण ॥
कुमति कुतर्की कुवादिनो मद गालवा ।
सूरा पूरा सूरिवर दीपे तपे जिम भाण ॥ गा. ॥ ६ ॥

सोहम पट्ट परस्पर क्षमा सूरिवर शोभता ।
तस पट्टे आपे श्री देवेन्द्र सूरि कल्याण ॥
पाटे प्रमोद सूरिवर मरुधर जन मन मोहता ।
जस पट्टधारी विजय राजेन्द्र सूरीश सुजाण ॥ गा. ॥ ७ ॥

पूजा अष्टप्रकारी ए गुण वर्णन कर्या जेहना ।
संवत शशि निधि नव इक अक्षय तृतीया खास ॥
दीक्षित गुरु गुण गाया भूपेन्द्र सूरिश्वर राज में ।
पाठक पद धर श्री यतीन्द्र विजय उल्लास ॥ गा. ॥ ८ ॥

जो नरनारी गुरु गुण पूजा भणसे गावशे ।
जस घर दिन दिन आनंद मंगल हर्ष अपार ॥
पूजा रचकर गाई गणधर सूरि राजेन्द्र नी ।
श्री सिद्ध क्षेत्र पालीताणे यतीन्द्र विजय मनुहार ॥ गा. ॥ ९ ॥

महा प्रभावशाली मंत्र

धागे अभिमंत्रित करने का गुरु कृपा प्राप्ति मंत्र :
नीचे दिये गये मंत्र को बोलते हुए पीले धागे पर ३६ गठान लगाना

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गुरुवराय राजेन्द्र सूरीश्वराय, विकट संकट निवारय निवारय ऋद्धि सिद्धि सुख शान्ति मम मनोवांछित पूरय पूरय आशिर्वादम् देही देही स्वाहा ।

धागा शक्ति सम्पन हो जाने के बाद इस धागे को आप अपने हाथ में या गले में बांध सकते हैं ।

आशीर्वाद मंत्र

श्रीगुरु परम दयाल है, बोधि बीज दातार ।
आगम वचनामृत करी, करता पर उपगार ॥१॥
गुरु सुरतरु पारस गुरु, कामधेनु गुरुराज ।
चिंतामणि गुरु कामघट, सेव्यां शु सिध काज ॥२॥

इम जाणी गुरु जो भजे, ईत उपद्रव जाय ।
रोग सोम सङ्कट हटे, डर शाकिनि विरलाय ॥३॥
भूत पिशाच निशाचर, जोटिंग अतिविकराल ।
सूरिराजेन्द्र मन्त्राक्षरे, दूर जाय ततकाल ॥४॥
हृदय कमलमें नित करे, गुरु अभिधा इक जाप ।
दीप विजय खे ताहिके, सतविध सुक्ख मिला ॥५॥

गुरु महाराज की आरती

ॐ जय जय गुरुदेवा, स्वामी जय जय गुरुदेवा ।
सूरि राजेन्द्र की आरती, कर पा शिव मेवा ॥ ॐ जय ॥

छतीस गुण के धारक, तारक उपकारी ॥ गुरु तारक ॥
शत्रु मित्र सम जाने, बाल ब्रह्मचारी ॥ ॐ जय ॥

धन्य पिता ऋषभाजी, केशर महतारी ॥ गुरु केसर ॥
धन्य भरतपुर नगरी, जन्में गुणधारी ॥ ॐ जय ॥

मिथ्या तिमिर विनाशक, चिन्तामणि जेवा ॥ गुरु चिन्ता ॥
मनवांचित फलदाता, करिये गुरु सेवा ॥ ॐ जय ॥

हुए समाधित गुरुवर, श्री मोहनखेडा ॥ गुरु श्री मोहनखेडा ॥
करु भक्ति तन मन से, पार करो बेडा ॥ ॐ जय ॥

पूज्य यतीन्द्र कृपा से पूरण हुई आशा ॥ गुरु पूर्ण ॥
कुन्दन वन्दन करले, कटे करम पाशा ॥ ॐ जय ॥

क्षमा याचना

पूजन में हुई किसी भी प्रकार की अशुद्धि - आशा के लिए मन वचन काया से गुरु देव के समक्ष क्षमा याचना करना,

आव्हानं नैवं जानामि, नैवं जानामि पूजनं ।
विसर्जनं नैवं जानामि, क्षमस्य परमेश्वरं ॥

आज्ञा हीनं क्रिया हीनं मंत्र हीनं च यत् कृतम् ।
तत्सर्वम क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वरं ॥

नीचे दीये गये मंत्रोच्चार (तीन बार बोलना) करते हुए अस्त्रमुद्रा से मांडले की सामग्री को चलायमान करना ।

ॐ ह्रीं श्रीं गँ गुरुवराय राजेन्द्र सूरीश्वराय पूनरागमनाय स्वस्थानम् गच्छ गच्छ ज: ज: ज:

अस्त्रमुद्रा

उपसर्गा.....

संकट मोचन स्त्रोत

मुझ पापी को तारना हु अवगुण की खान ।
विनती बारम्बार है देना सम्यक् ज्ञान ॥

सन्मति दाता सबके त्राता, गुरुगुण गाता बलिहारी,
चर कहलाता चरणे आता मन मुद पाता जयकारी ।
असत्य निवारी समकीत धारी, आंनदकारी उपकारी ।
राजेन्द्र सूरिन्दा हो सुखकंदा पूनम चंदा जग हितकारी ॥ १ ॥

जिन गुण रागा उर में जागा दुःख सब भागा लख उपकारी ।
कुछ नहीं लेता, बनकर नेता, शिक्षा देता विश्व विहारी
जपतप करके समता धरके संयम वरके आतम तारी
राजेन्द्र सूरिन्दा हो सुखकंदा पूनम चंदा जग हितकारी ॥ २ ॥

भावुक ध्यावे वांछित पावे, कमला आवे बिन उपचारी,
संकट जावे भय मिट जावे पुत्र खिलावे मिल नर नारी,
तन सुख पावे, आभय जावे किन्नर गावे गुरु उपकारी,
राजेन्द्र सूरिन्दा हो सुखकंदा पूनम चंदा जग हिताकारी ॥ ३ ॥

स्मरण करता नित्य तुम्हारा कभी न डरता वह संसारी,
अरि मित बन जावे जनमन भावे, इज्जत पावे बन व्यवहारी,
विद्या के स्वामी अन्तर्यामी, जन विसरामी मुझ तरीतारी,
राजेन्द्र सूरिन्दा हो सुखकंदा पूनम चंदा जग हितकारी ॥ ४ ॥

केशर महतारी देन तुम्हारी, गुणमणि जाणी जग हितकारी,
जिनशासन के प्रहरी बन के उन्नति करके जीवन तारी
सूरि यतिन्दा यतिपति इन्दा हर भव फंदा विनती उच्चारी,
राजेन्द्र सूरिन्दा हो सुखकन्दा पूनमचंदा जग हितकारी ॥ ५ ॥

विद्यासूरि यतीन्द्र गुरु आप महान कृपाल
परम स्तोत्र-पढे नित्य जो, घर घर मंगल माल ॥

कंकु रे पगले आप पधारो

बोल म्होटा महाराजा, कंकु रे पगले आप पधारो हो म्होटा ॥

: अन्तरा :

पहलो तो उपदेश गुरुजी, जालोरी में दीधो रे,
ढुंढक पंथ हटाय ने शुद्ध समकित किधो हो ॥ म्होटा १ ॥

दुजो तो उपदेश गुरुजी, गुर्जर देशे दिधो रे,
डुंगर ने नेमाड गुरुजी, सर किना हो ॥ म्होटा २ ॥

तीजो तो उपदेश गुरुजी, मालव देश छाजे हो,
गच्छपति तुम देखने पिताम्बर लाजे हो ॥ म्होटा ३ ॥

चोथो तो उपदेश गुरुजी थरादरी मां दीधो हो,
शुद्ध समकित दईने, श्रावकिया कीना हो ॥ म्होटा ४ ॥

आपरा परताप स्वामी कच्छ भुज सरहद किनी हो,
आपरा परताप से भीनमाल भीनी हो ॥ म्होटा ५ ॥

भरतपूर में जन्म आपरो, जावरा में गादी हो,
सूत्रागम ने देखने हटाया वादी हो ॥ म्होटा ६ ॥

शील ने संतोष साहेब ज्ञान गुणों रा दरीया हो,
राजगढ में आय सूरिजी, शीव पुर वरिया हो ॥ म्होटा ७ ॥

सूरि विजय राजेन्द्र चरण को तेजराज नित ध्यावे हो,
आपरा परताप से मन वांछित पावे हो... ॥ म्होटा ८ ॥

सितारा जिन शासन का

(तर्ज : उडे जब जब जुल्फें तेरी)

हो ऽऽ एक डंडा वाला आया, ओ जीऽऽऽ ओ ऽऽऽ
सितारा जिन शासन का.... गुरुरायों रे....

: अन्तरा :

होऽऽ जिने जन्म लिया भरतपूर में, ओ जीऽऽऽ ओ ऽऽऽ
फैलायी ज्योति जगभर में..... गुरुराया रे ॥ १ ॥

होऽऽ गुरु राजेन्द्र सूरि राया रे, ओ जीऽऽऽ ओ ऽऽऽ
भक्तों का रखवाला रे... गुरुराया रे... ॥ २ ॥

होऽऽ पल पल जिन्दगानी बित जाये रे, ओ जी ऽऽऽ ओ ऽऽऽ
जाये पाछी नहीं आवे... गुरुराया रे.. ॥ ३ ॥

होऽऽ नरतन दुर्लभ तुने पाया रे, ओ जीऽऽऽ ओ ऽऽऽ
के बैर बैर नहीं आवे... गुरुराया रे.. ॥ ४ ॥

होऽऽ मोहनखेडा तीरथ प्यारा रे, ओ जीऽऽऽ ओ ऽऽऽ
भक्तों का तारणहारा रे... गुरुराया रे... ॥ ५ ॥

खम्मा खम्मा

खम्मा खम्मा ओ म्हारा प्यारा गुरुवरजी
थाने तो ध्यावे आखी मारवाड रे, आखो गुजरात रे,
माता केसरबाई रा लाडला ॥ खम्मा ॥

: अन्तरा :

थारा दरशन करवा आवे, दूर दूर से यात्री,
माला थारी फेरे गुरुजी, उतरे थारी आरती,
म्हाने भी वेगा दर्शन हो... दीजो हो ॥ माता ॥ १ ॥

दुखीया थारे द्वारे आवे, अपना दुःख मिटाने को,
निर्धनीया ने धन मिल जावे, ऐसी शक्ति पाने को,
दुखडा भी मेरा अब, दुर करो ॥ माता ॥ २ ॥

केशरमा रा लाडला थे जग में नाम कमायो रे,
राजेन्द्र सूरि नाम आपरो कुल दीपक कहायो रे,
महिमा है थारी हो, अपरम्पारा हो,
माता केसरबाई रा लाडाला ॥ माता ॥ ३ ॥

वंदिये रे गुरु राजेन्द्र राया

(तर्ज : तिलडी रे म्हारा प्रभुजी ने सोभती... गरबा)
वंदिये रे गुरु राजेन्द्र राया
मैं तो अज्ञानी उपकारी ओ गुरुजी म्हारा.... वंदिये रे....

: अंतरा :

मन वंछित फल आपे गुरु देवा
समता ने सत्यशील धारी ओ गुरूजी म्हारा... वंदिये रे.... ॥ १ ॥

परम उपकारी गुरु सुपथ बतावतो
त्यागी ने बाल ब्रह्मचारी ओ गुरुजी म्हारा.... वंदिये रे.... ॥ २ ॥

भरतपूर पून्यशाली नगर सोहामणु
जठे आप जनमिया संसारी, ओ गुरुजी म्हारा... वंदये रे... ॥ ३ ॥

धन्य धन्य रे माता केसरबाई,
ऋषभदास तातजी सोहाय ओ गुरुजी म्हारा.... वंदिये रे... ॥ ४ ॥

आचार्य पाट केरी गादी दीपावी
नैन जावे वारी नरनारी ओ गुरुजी म्हारा... वंदिये रे.... ॥ ५ ॥

खिडकी खोलो तो दर्शन हो जाये

(तर्ज : श्याम तेरा मंदिर....)

मेरे घर के आगे गुरुराज तेरा एक मंदिर बन जाये
जब खिडकी खोलू तो तेरा मुख दर्शन हो जाये

जब होगी आरती तेरी, मुझे घंटी सुनाई देगी
मुझे रोज सबेरे दादा, तेरी मुरत दिखाई देगी
जब भक्ति करे कोई, मुझको भी सुनवाये
जब खिडकी....

मे आते जाते दादा, तमको प्रणाम करुंगा,
जो मेरे लायक होगा, वो तेरा काम करुंगा,
तेरी सेवा करने से, मेरा दिन ही निकला जाये,
जब खिडकी....

नजदिक रहेंगे दोनों तो आना - जाना होगा,
मेरे दादा हम दोना का बस एक ठिकाना होगो
तुम समाने हो मेरे, तो मेरा काम ही बन जाये ।
जब खिडकी....

म्हारा गुरु जी रो

(तर्ज : मारी मंगेतर नथनी वाली...)

म्हारा गुरु जी रो कांई रे कहेनो
महावीर नाम रो पहेने घहेनो
राजेन्द्र सुरि माहाराज, गुरु वर रो जवाब नही
पूजन मा उडेरे गुलाल, पूजन रो जवाब नहीं

पूजन में गुरुवर परचा पूरे
भक्तो के सारे संकट चूरे
ज्ञान गुणना भण्डर... पूजन रो...

कंकुना पगले आप पधारो
श्रध्धा से पूजना करु आप शिवकारो
महिमा अपरम्पार... पूजन रो.....

जग में आप री महिमा भारी
पूजे आपने मिल नर नारी
गुण गाये दिनरात.... पूजन रो....

लवकेश मन एक भावना भाये
प्राण तेरे चरणो में जाये
जपता रहुँ में तेरा नाम.... पूजन रो.....

चंदन सा जीवन

(तर्ज : कहो ना प्यार है.... टाईटल)

चंदन सा जीवन है फूलो सी मुस्कान है
ये गुरुवर महान है, (हाँ) गुरु तो महान है
वाणी जिनकी मीठी है भक्तो की जो जान है.....

गुरुवर को दिल से भजे, दर्शन गुरु के पाले
भाव से जो, पूजा रचे, अपना काम बनाले
करो उनको याद, लो आशीर्वाद
वो कल्पवृक्ष समान है... ये गुरु....

गुरु दिपक, ज्ञान का, ज्ञान का है खजाना
ऐसे गुरु, मिलेना कही, सारी जग ने माना
हम तेरे दास, मन में है आश
पूरी कर दो अपना जान के .... ये गुरु.....
गुरु राजेन्द्र, राज करे, मोहनखेडा प्यारा
लवकेश तेरे, द्वारा खडा, क्यों न इस को तारा
वो निर्विकार, करे सबको पार
जो जपते नवकार है... ये गुरु...

गुरुपद महापूजन में लगनेवाली

आवश्यक सामग्री

मंदिर से :	बर्तन, नाली वाली थाली, केसर कटोरी,कलश ५, कुंडी १, तासका १०, थाली १०.
अन्य सामान :	पटला, बाजोट, मोरपिंछी, खंसकुंची, आरती धूपदाना, दीपक, कंडील आदि
किराना दुकान से :	केसर १ ग्राम, चाँदी का वरक ३ थोकडी, अगरबत्ती पैकेट-२ , आखी बादाम ५०, सुपारी ५०, मिश्री ५० कटका (५०० ग्राम), लौंग १० ग्राम, इलायची १० ग्राम, कमल गट्टा-३६, गुलाबजल शीशी १ , चमेली तेल शीशी १ , इत्र की शीशी २ , लच्छी १ , नारियल ५० , देशी घी १ किलो, चावल १ किलो, चावल १२ किलो मांडला वास्ते, डंडी सहित पान ५० । ५० रुपये के कल्लदार एवं ५० चवन्नी, दुध, दही
मिठाई की दुकान से :	मिठाई १ किलो मिक्स, बूंदी का लड्डू ४५ , लड्डू १डब्बा बडा ।
फल का दुकान से :	सेवफल, मौसम्बी, कोई भी एक प्रकार का ५०, अनार-६ , केले -६
कपडे की दुकान से :	साडी १ लाल, अथवा केसरीया नेपकीन - २
अन्य सामान :	मिट्टी के दिवानीये का काँच के गिलास ५०
माली की दुकान से :	फुल गुलाब ५०, माला - ५
मंदिर की पेढी से :	ब्रास, बादल ५ ग्राम, धूपपूडा २, वासक्षेप, रक्षापोटली, सर्वोषधि, पंचरत्नी की पोटली, सोनेका वरख,तीर्थ जल की शीशी.

श्री राजेन्द्रसुरि स्तवन

कोयल टहुँकी रही मालवादेशे
राजेन्द्रसूरी वसो मोरे दिलमें... कोयल... ॥१॥
राजस्थान भरतपुरनगरे
जन्म लियो गुरु पारेखगौत्रे... कोयल... ॥२॥
ऋषभदासना कुलना दीपक
केशरबाईना लाडकवाया... कोयल... ॥३॥
बालपणे गुरु अद्‌भुत ज्ञानी
बालिका को प्रेत भगायो एक क्षण में... कोयल...॥४॥
बीस वरसे गुरु संयम लीनो,
भींज गयो एक संयम रंग में... कोयल... ॥५॥
दीक्षा लई गुरु विचरवा लाग्या
अंजनशलाका आहोर नगरे...कोयल... ॥६॥
समाधि मंदिर मोहनखेडा
पारकरे भविजन का बेडा...कोयल...॥७॥
गुरु भक्तों की यही अरज है,
दिल अटके थोरा चरण कमल में...कोयल... ॥८॥

(तर्ज: गंगा मईया में जब तक...)
नील गगन में जब तक सितारे रहें...
गुरु राजेन्द्र के हम गीत गाते रहें...(२)
गुरु हो राजेन्द्र गुरु...॥१॥

तेरे चरणो मे आज हम आये, फुल गीतो के हमने सजाये
मेरे जीवन आधार, मेरी नैया कर पार,
मेरे अधरों पे तेरे तराने रहें...(२)
गुरु हो राजेन्द्र गुरु...॥१॥

तुं ने लाखों की बीगडी बनाई, ज्ञान की ज्योती तुने जलायी
दादा अब मेरी बार भव सागर से तारे
तेरे चरणो कें हम सव सहारे रहें...(२)
गुरु हो राजेन्द्र गुरु...॥१॥

दादा कलियुग में तू है सहारा, मेरी नैया का तुं है किनारा
खोलो नयनो के द्वार, पाउँ मैं तेरा प्यार
अपने जीवन को सफल बनाते रहें... (२)
गुरु हो राजेन्द्र गुरु...॥१॥

मेरे नयनपट अब खुला दो, मेरे चेतन को दादा जगा दो
घट में अरिहंत ध्यान मिटे अभिमान मान
तेरे वीतराग पथ पर ही आते रहें... (२)
गुरु हो राजेन्द्र गुरु...॥१॥

राजेन्द्र सूरि धनचन्द्र प्यारे,
आनंद कारे अवनि सितारे,
भूपेन्द्र लाला सूरि यतीन्द्र आला,
विधा अनुठी गुरु ज्ञान माला ।

राजेन्द्र तेरी वाणी धनचन्द्र ने सुनी थी ।
भूपेन्द्र तेरी प्रतिमा, यतीन्द्र में समी थी ॥
पर सोम्यता लिए तो चमका प्रबल सितारा ।
मोहनखेडा आंगन मे, गुरुदेव हमारा ॥

मालिनी छंदः-

अखिल जगत में है, कीर्ति फैली सुहानी,
धवल-विमल सारी, जिन्दगी की कहानी ।
अतिशय गुणधारी, सुरि राजेन्द्र ज्ञानी,
गुरुवर उपकारी, वंदना हो सुकानी ॥

शार्दुल. ... छंदः-

आये थे बन सूर्य जैन जगमें, भव्योप्पलो के लिए
साध्वाचार विशुद्ध पालन किया, शैथिल्य दुरी किए ।
स्वालम्बी बन के स्वपथ में थे, शीघ्रगामी सदा,
सद् भावांजलि साथ वंदन करे, राजेन्द्र को सर्वदा ॥

समता तणा सागर मही जे, शांत रस थी झीलता,
चारित्र केरा बाग मा जे, कर्म गन्थि ने पीलता ।
व्याधि असाधारण समाधि भाव थी सहेता सदा,
श्री राजेन्द्र गुरुवर आपजो अमने समता सदा ॥

सम्यक्त्वदानी निराभिमानी, ज्ञान के अंगार थे,
पीयूष सम देशना से, मुक्ति के श्रृंगार थे ।
थे परम पावन भक्ति भावन, विश्व पूजित आप ही,
श्रीमद् विजय राजेन्द्र गुरुवर नित करे तप जाप ही॥

विश्वपूज्य, कलिकाल कल्पतरु, दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म	:	वि.सं. १८८३ पौष शुक्ला ७	नाम	:	रत्नराज
पिताश्री	:	श्री ऋषभदासजी	माताश्री	:	श्रीमती केशरबाई
भ्राताश्री	:	माणकचंद	गौत्र	:	पारख गोत्रीय
स्थान	:	भरतपुर (राज.)	व्यापार	:	कलकत्ता व सिलोन
दीक्षा अनुमति	:	भ्राता माणकचंद			
दीक्षा	:	वि.सं. १९०४ वैशाख सुदि ५ उदयपुर (राज.)	दीक्षा प्रदाता	:	श्री हेमविजयजी म.सा.
बड़ी दीक्षा	:	वि.सं. १९०९ उदयपुर (राज.)	गुरु नाम	:	श्री प्रमोदसूरिजी म.सा.
आचार्य पद	:	वि.सं. १९२४ वैशाखसुदि ५	पद प्रदान	:	श्री प्रमोदसूरीजी म.सा., आहोर (राज.)

क्रियोद्धार	:	वि.सं. १९२४ आषाढ वदि १०, जावरा (म.प्र.)
वृहद ज्ञानभंडार स्थापना	:	वि.सं. १९५९, आहोर (राज.)
त्रिस्तुतिक मत पुनरोद्धार	:	वि.सं. १९२५ आषाढ सुदि १०, खाचरौद
तीर्थोद्धार	:	भाण्डवपुर, कोरटा, लक्ष्मणी आदि
अभिधान राजेन्द्रकोष प्रारंभ	:	वि.सं. १९४६, सियाणा
अभिधान राजेन्द्रकोष समापन	:	वि.सं. १९६०, सूरत
अ. राजेन्द्रकोष संपादक नियुक्ति	:	वि.सं. १९६३, पौष सुदि ३, राजगढ मुनिश्री दीपविजयजी एवं यतीन्द्रविजयजी म.सा.
शासन प्रभावना	:	आहोर में ९०० जिनबिंबों की अंजनशलाका वि.सं. १९५५ माघ सुदि १०
मोहनखेड़ा तीर्थ स्थापना	:	१९४० मगसर सुदि ७
देवलोक गमन	:	वि.सं. १९६३ पौष शुक्ला ६, राजगढ (म.प्र.)
अग्नि संस्कार	:	पौष शुक्ला सप्तमी (गुरु सप्तमी), मोहनखेड़ा (म.प्र.)

त्रिस्तुतिक मत एवं मान्यता

विश्वपूज्य प्रातः स्मरणीय, गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. सही अर्थों में एक धर्मवीर, कर्मवीर, महापुरुष थे। उनके लिए प्रयुक्त ये तीनों विशेषण उनके जीवन को देखते हुए यथार्थ प्रतीत होते हैं। यहाँ पर इनका स्पष्टीकरण करना विषयेत्तर होगा। क्योंकि यहां हम केवल त्रिस्तुतिक मत पर ही विचार कर रहे हैं।

आज भी जबकि सब कुछ प्रमाणों के संदर्भ में यह प्रमाणित हो चुका है कि त्रिस्तुतिक मत काफी प्राचीन है, तब भी अनेक व्यक्ति यही जानते और कहते हैं कि त्रिस्तुतिक मत श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वर म.सा. ने चलाया है। प्रस्तुत आलेख में हम यह देखने का प्रयास करेंगे कि त्रिस्तुतिक की मान्यता क्या है और यह कितना प्राचीन है तथा उसमें गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का कितना और किस प्रकार का योगदान है। वस्तुतः त्रिस्तुतिक मत के अस्तित्व के प्रमाण आज से हजार वर्ष पूर्व के उपलब्ध होते हैं। त्रिस्तुतिक मत की प्राचीनता के प्रमाण प्रस्तुत करने के पूर्व हम यह देखना उचित समझते है कि त्रिस्तुतिक मत की मान्यता क्या है ?

त्रिस्तुतिक मत की मान्यता – गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. उच्च कोटि के साधक के साथ ही साथ उच्चकोटि के विद्वान भी थे। उन्होंने अपने जीवन काल में हजारो ग्रंथों का तलस्पर्शी अध्ययन किया था और अपने अध्ययन, मनन और चिंतन के आधार पर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि प्रतिक्रमण, प्रायश्चित आदि क्रियाएँ एवं अरिहंत परमात्मा के सामने की जाने वाली देव वंदना आदि विधियों में सरागी देवी-देवताओं की वंदना, अर्चना, प्रार्थना नहीं होनी चाहिए क्योंकि वीतरागी देव को की गई प्रार्थना ही मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करेगी। हाँ, व्यवहार पक्ष से गृहस्थोचित्त कर्म के लिए उनकी पूजा अर्चना प्रार्थना कहीं निषिद्ध नहीं है, मोक्ष के अभिलाषी प्राणियों के लिए त्रिस्तुतिक मत शुद्ध रुप से राजमार्ग है, यह मत कदाग्रह हठाग्रह से सर्वथा मुक्त है और नवीन भी नहीं है, प्राचीन ही है।

पूज्य गुरुदेव ने अपने अध्ययन, मनन, चिंतन के द्वारा साध्वाचार मर्यादा की क्रियाविधियों में मध्यकाल मे आये प्रक्षेपों का संशोधन किया और पुनः त्रिस्तुतिक समाज का नये ढंग से पुनःउद्धार किया। आपश्री को मानने वाले सुख-शांति और समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर है।